हिंदी - الهندية

कलीमुल्लाह मूसा बिन इमरान अलैहिस्सलाम की संक्षिप्त जीवनी

संकलनः

शैख़ हैसम बिन मुहम्मद सरहान

पूर्व शिक्षक अल-ह़रम शिक्षण संस्थान, मस्जिद -ए- नबवी
व महा प्रबंधक "मअहद अल् सुन्नह"

http://www.alsarhaan.com

अल्लाह हमारे शैख़, उनके माता-पिता तथा जिन्होंने इस पुस्तक को मूर्त रूप देने में उनकी सहायता की, सब को क्षमा करे

अनुवादः

साबिर हुसैन पुत्र मुहम्मद मुजीबुर रहमान

प्रथम संस्करण

सामग्री में कोई बदलाव किए बिना प्रत्येक मुस्लिम के लिए कॉपीराइट उपलब्ध है

कलीमुल्लाह मूसा अलैहिस्सलाम

नाम:	मूसा – तथा इसका अर्थ है: पानी से बाहर निकाला हुआ।
पिता का नाम:	इमरान – तथा वह याक़ूब पुत्र इस्हाक़ पुत्र इब्राहीम के वंश से हैं।
उनके भाई का नाम:	हारून - उन्हें मूसा अलैहिस्सलाम के बाद उनका समर्थन एवं उनकी सहायता के लिये भेजा गया था, तथा उनके लिये अल्लाह के निकट मूसा अलैहिस्सलाम की सिफ़ारिश के कारण ऐसा हुआ था।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल -तथा इस्राईल याक़ूब अलैहिस्सलाम की उपाधि थी- को मिस्र में प्रवेश दिलाया था, जब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की मृत्यु हो गई तो फ़िरऔन के लोगों ने उन्हें बड़ी कष्टदायक पीड़ाएं पहुँचाई, अन्ततः सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह ने मूसा एवं हारून अलैहिमस्सलाम को बनी इस्राईल एवं फ़िरऔन तथा उनके समुदाय के पास भेजा, फिर अल्लाह ने उन दोनों के बाद उन्हें भेजा जिनका नाम क़ुरआन में दावूद एवं सुलैमान अलैहिमस्सलाम बताया गया है।

आपके सेवक का नाम:	यूशअ बिन नून अलैहिस्सलाम – तथा मूसा एवं हारून अलैहिमस्सलाम की मृत्यु के बाद यह नबी बनाए गए।
आपके शिक्षक का नाम:	ख़ज़िर -तथा इस बात में मतभेद है कि वह एक नेक आदमी थे अथवा नबी।
आपकी उपाधि तथा आपकी कुछ विशेषताएं:	कलीमुल्लाह (अल्लाह से वार्तालाप करने वाले), सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह ने उन्हें ऐसे महान आशीर्वाद से अनुग्रहीत किया जिससे किसी अन्य को अनुग्रहीत नहीं किया, क्योंकि उन्हें सर्वशक्तिमान अल्लाह द्वारा पृथ्वी पर रह कर उससे बात करने का आशीर्वाद प्राप्त था तथा यह उस महान हिकमत (तत्वदर्शिता) के कारण था जिसे केवल अल्लाह ही जानता है, इसी कारणवश मूसा अलैहिस्सलाम को "कलीमुल्लाह (अल्लाह से बात करने वाला)" कहा जाता है, क्योंकि अल्लाह तआला ने उन्हें सम्मान दिया तथा सात आसमानों के ऊपर से उनसे प्रत्यक्ष रूप से बात की, बाकी पैग़म्बरों और दूतों की तरह किसी वह्य (आकाशवाणी) अथवा मनुष्यों की मध्यस्थता के बिना, वह अल्लाह द्वारा चयनित तथा उलुल अज़्म (दृढ़ संकल्प) रसूलों में से एक हैं, ﴿وَكَانَ عِندَ ٱللَّهِ وَجِيهًا ۝٦٩﴾ (तथा वह था अल्लाह के निकट सम्मानित)। सूरह अहज़ाब: 69, अर्थात: सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह

आपकी उपाधि तथा आपकी कुछ विशेषताएं:	के निकट उनका सम्मान एवं प्रतिष्ठा थी, ह़सन बस़री रह़िमहुल्लाह कहते हैं कि: (उनके द्वारा की गई प्रार्थना अल्लाह के निकट आवश्यक रूप से स्वीकार की जाती थी)। यह वही हैं जिन्हें अल्लाह ने अपने लिये विशेष बना लिया था, सर्वोच्च अल्लाह का कथन है: ﴿ثُمَّ جِئْتَ عَلَىٰ قَدَرٍ يَٰمُوسَىٰ ۝٤٠ وَٱصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِى ۝٤١﴾ (फिर तू (मद्‌यन से) अपने निश्चित समय पर आ गया, हे मूसा! और मैंने बना लिया है तुझे विशेष अपने लिये)। सूरह त़ाहा: 40-41।
आपके शत्रु का नाम:	फ़िरऔन – तथा वह रमसीस द्वितीय है जिसका उल्लेख इतिहासकारों ने किया है-, एवं उसका मंत्री: हामान, ﴿إِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَٰمَٰنَ وَجُنُودَهُمَا﴾ (वास्तव में फ़िरऔन, हामान एवं उनकी सेनाएं)। सूरह क़स़स़: ८।
आपकी किताब का नाम:	तौरात एवं स़ुहुफ़ – तथा इसमें मतभेद है कि दोनों अलग-अलग किताबें हैं अथवा एक ही किताब के दो नाम हैं।
आपका जन्म एवं मृत्यु:	मूसा अलैहिस्सलाम का जन्म मिस्र में तथा मृत्यु त़ूर पर हुई।
उनका पेशा:	आप अलैहिस्सलाम बकरियां चराते थे।
आपका लालन-पालन करने वाली का नाम:	आसिया -जोकि फ़िरऔन की पत्नी थी-।
आपकी निशानियां:	हमारे नबी मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद सर्वाधिक निशानियां आप को ही प्रदान की गई थीं।
आपका वर्तमान स्थान:	छठे आसमान पर, जैसा बुख़ारी व मुस्लिम में वर्णित अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की ह़दीस़ में उल्लेखित है।
लाठी:	आप अलैहिस्सलाम एक लाठी रखते थे, और उन्होंने इसका कारण यह बताया: ﴿هِىَ عَصَاىَ أَتَوَكَّؤُا۟ عَلَيْهَا وَأَهُشُّ بِهَا عَلَىٰ غَنَمِى وَلِىَ فِيهَا مَـَٔارِبُ أُخْرَىٰ ۝١٨﴾ (यह मेरी लाठी है, मैं इसका सहारा लेता हूँ तथा इससे अपनी बकरियों के लिये पत्ते झाड़ता हूँ एवं मेरी इससे दूसरी आवश्यकताएं (भी) हैं।
आपका धर्म:	मूसा अलैहिस्सलाम यहूदी धर्म ले कर नहीं आए थे, बल्कि आप इस्लाम को उस सामान्य अवधारणा में लेकर आए थे, जिसका अर्थ है: (केवल अल्लाह

आपका धर्म:	के प्रति समर्पण), यह नूह अलैहिस्सलाम से ले कर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक सभी पैग़म्बरों का धर्म है। अल्लाह ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बारे में कहा: ﴿ مَا كَانَ إِبْرَٰهِيمُ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا وَلَٰكِن كَانَ حَنِيفًا مُّسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ ٱلْمُشْرِكِينَ ﴿٦٧﴾ ﴾ (इब्राहीम न यहूदी थे न नसरानी (ईसाई), परंतु वह एकेश्वरवादी मुस्लिम आज्ञाकारी थे, तथा वह बहुदेववादियों में से नहीं थे) [आले इमरान: ६७], और अल्लाह ने मूसा अलैहिस्सलाम के बारे में कहा: ﴿ وَقَالَ مُوسَىٰ يَٰقَوْمِ إِن كُنتُمْ ءَامَنتُم بِٱللَّهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوٓا۟ إِن كُنتُم مُّسْلِمِينَ ﴿٨٤﴾ ﴾ (और मूसा ने कहा: हे मेरे समुदाय के लोगों! जब तुम अल्लाह पर ईमान लाए हो तो उसी पर निर्भर रहो, यदि तुम आज्ञाकारी हो) [यूनुस: ८४], इस आधार पर यहूदी धर्म मूसा अलैहिस्सलाम द्वारा लाए गए सच्चे धर्म से विकृत एक झूठा धर्म है। उन्हें यहूदी कहने का कारण: उनके अनुयायियों को यहूदी या तो उनके यह कहने के कारण कहा जाता था: ﴿ إِنَّا هُدْنَآ إِلَيْكَ ﴾ (इन्ना हुदना इलैका) [अल-आराफ: १५६], जिसका अर्थ है: हमने पश्चाताप किया और लौट आए, या याकूब अलैहिस्सलाम की संतान में सबसे बड़े बेटे यहूज़ा के कारण।
उनकी माँ के साथ कहानी का संदर्भ:	सूरह अल-क़सस में अल्लाह के कथन: ﴿ وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰٓ أُمِّ مُوسَىٰٓ أَنْ أَرْضِعِيهِ ﴾ (हमने वह्य की मूसा की माता की ओर कि उसे दूध पिलाती रह) से लेकर अल्लाह के कथन: ﴿ فَرَدَدْنَٰهُ إِلَىٰٓ أُمِّهِۦ كَىْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ أَنَّ وَعْدَ ٱللَّهِ حَقٌّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٣﴾ ﴾ (तो हमने फेर दिया उसे उस की माँ की ओर ताकि ठण्डी हो उसकी आँख और चिंता न करे, और ताकि उसे विश्वास हो जाए कि अल्लाह का वचन सत्य है, परंतु अधिकतर लोग विश्वास नहीं रखते) तक, को छोड़कर कहानी के पूरे संदर्भ का उल्लेख कहीं नहीं किया गया है।
आपकी नौ निशानियां:	अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿ وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا مُوسَىٰ تِسْعَ ءَايَٰتٍۭ بَيِّنَٰتٍ ﴾ (हमने मूसा को नौ खुली निशानियां दी)। तथा इन निशानियों का उल्लेख क़ुरआन में विस्तार के साथ किया गया है: [1] लाठी: ﴿ فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِىَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ﴿١٠٧﴾ ﴾ (फिर मूसा ने अपनी लाठी फेंकी तो अकस्मात् वह एक अजगर बन गई)। आराफ़: १०७।

आपकी नौ निशानियां:	[2] हाथ: ﴿وَنَزَعَ يَدَهُۥ فَإِذَا هِيَ بَيۡضَآءُ لِلنَّٰظِرِينَ ١٠٨﴾ (और अपना हाथ निकाला तो वह देखने वालों के लिये चमक रहा था)। आराफ़: १०८। [3] ज़ुबान: ﴿وَٱحۡلُلۡ عُقۡدَةٗ مِّن لِّسَانِي ٢٧ يَفۡقَهُواْ قَوۡلِي ٢٨﴾ (और खोल दे मेरी ज़ुबान की गांठ। ताकि लोगों को मेरी बात समझ आए)। ताहा: २७-२८। [4] समुद्र में मार्ग बन जाना: ﴿فَأَوۡحَيۡنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰٓ أَنِ ٱضۡرِب بِّعَصَاكَ ٱلۡبَحۡرَۖ فَٱنفَلَقَ﴾ (तो हमने मूसा को वह्य की कि मार अपनी लाठी से सागर को, अकस्मात् सागर फट गया)। शुअरा: ६३। [5-9] तूफ़ान, टिड्डी दल, जूँ, मेंढक एवं रक्त: ﴿فَأَرۡسَلۡنَا عَلَيۡهِمُ ٱلطُّوفَانَ وَٱلۡجَرَادَ وَٱلۡقُمَّلَ وَٱلضَّفَادِعَ وَٱلدَّمَ ءَايَٰتٖ مُّفَصَّلَٰتٖ فَٱسۡتَكۡبَرُواْ وَكَانُواْ قَوۡمٗا مُّجۡرِمِينَ ١٣٣﴾ (अंततः हमने उन पर तूफ़ान (उग्र वर्षा) तथा टिड्डी दल एवं जुऐं और मेंढक तथा रक्त की वर्षा भेजी, अलग-अलग निशानियां, फिर भी उन्हों ने अभिमान किया, और वह थी ही अपराधी जाति)। आराफ़: 133।
मूसा अलैहिस्सलाम की शारीरिक विशेषताएं:	नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनका गुण बताते हुआ फ़रमाया: "**मैंने इस्रा वाली रात मूसा अलैहिस्सलाम के देखा गेहुँआ रंग, लम्बे कद काठी के एवं घुंघराले बालों वाले थे, मानो शनूअह क़बीला का कोई आदमी हो**"। बुख़ारी व मुस्लिम। यह शक्ति और साहस की विशेषताओं में से एक है, अल्लाह तआला ने व्योवृद्ध व्यक्ति की पुत्री की ज़ुबानी कहा: ﴿إِنَّ خَيۡرَ مَنِ ٱسۡتَـٔۡجَرۡتَ ٱلۡقَوِيُّ ٱلۡأَمِينُ ٢٦﴾ (सबसे उत्तम जिसे आप सेवक बनाएं वही हो सकता है जो बलशाली विश्वसनीय हो)। क़सस: २६। क़ुरआन में मूसा अलैहिस्सलाम को छोड़कर किसी भी पैगम्बर को युवावस्था में पहुँचने के पश्चात परिपक्वता प्राप्त करने के रूप में वर्णित नहीं किया गया है: ﴿وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُۥ وَٱسۡتَوَىٰٓ ءَاتَيۡنَٰهُ حُكۡمٗا وَعِلۡمٗاۚ﴾ (जब वह अपनी युवावस्था को पहुँचा और उसका विकास पूरा हो गया तो हमने उसे प्रबोध तथा ज्ञान दिया)। क़सस: १४।
मूसा अलैहिस्सलाम की नैतिक विशेषताएं:	[1] अत्याधिक धैर्य: "**अल्लाह तआला मूसा अलैहिस्सलाम पर दया करे, उन्हें इससे अधिक कष्ट दिया गया था, किंतु उन्होंने धैर्य रखा**"। बुख़ारी व मुस्लिम। [2] ज्ञान की व्यापकता: "**मूसा अलैहिस्सलाम एक दिन अपने समुदाय**

के लोगों को संबोधित कर रहे थे इसी बीच उन्होंने कहा: पृथ्वी पर मुझसे बड़ा ज्ञानी कोई नहीं है"। इसे इमाम अहमद ने रिवायत किया है।

[3] अल्लाह पर तवक्कुल व भरोसा: ﴿عَسَىٰ رَبِّيٓ أَن يَهۡدِيَنِي سَوَآءَ ٱلسَّبِيلِ ٢٢﴾ (मुझे आशा है कि मेरा पालनहार मुझे सीधा मार्ग दिखाएगा)। क़सस: २२।

[4] मन एवं शरीर की शक्ति तथा ईमानदारी: ﴿إِنَّ خَيۡرَ مَنِ ٱسۡتَـٔۡجَرۡتَ ٱلۡقَوِيُّ ٱلۡأَمِينُ ٢٦﴾ (सबसे उत्तम जिसे आप सेवक बनाएं वही हो सकता है जो बलशाली विश्वसनीय हो)। क़सस: २६।

[5] सीने का खोल दिया जाना: ﴿قَالَ رَبِّ ٱشۡرَحۡ لِي صَدۡرِي ٢٥﴾ (मूसा ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! खोल दे, मेरे लिये मेरा सीना)। ताहा: २५।

[6] वीरता, पुरुषत्व और दूसरों की सेवा करने की पहल: ﴿فَسَقَىٰ لَهُمَا﴾ (उन दोनों के लिये (पशुओं को) पानी पिलाया)। क़सस: २४।

[7] वचन को पूरा करना: ﴿فَلَمَّا قَضَىٰ مُوسَى ٱلۡأَجَلَ﴾ (जब मूसा ने अवधि पूरी कर ली)। क़सस: २८।

[8] उत्पीड़ितों की मदद करना: जैसा कि उस व्यक्ति की कहानी में है जिसे मूसा अलैहिस्सलाम ने घूंसा मारा था तो वह मर गया।

[9] विनम्रता, दूसरों के उपकार की स्वीकृति, तथा ज्ञान अर्जित करने की प्रबल इच्छा: ﴿عَلَىٰٓ أَن تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمۡتَ رُشۡدٗا ٦٦﴾ (ताकि मुझे भी उस भलाई में से कुछ सिखा दें जो आप को सिखाई गई हैं)। कहफ़: ६६।

[१०] दावत व निमंत्रण में तर्क एवं बोलने की ताकत, तथा दावत के कार्य में क्रमिक प्रगति।

[११] अल्लाह की ओर वापसी और पश्चाताप: ﴿قَالَ رَبِّ إِنِّي ظَلَمۡتُ نَفۡسِي فَٱغۡفِرۡ لِي﴾ (उसने कहा: हे मेरे पालनहार! मैंने अपने ऊपर अत्याचार कर लिया, तू मुझे क्षमा कर दे)। क़सस: १६।

[१२] अल्लाह का सहारा लेना, उस पर विश्वास रखना एवं उसकी सहायता की आशा रखना: ﴿قَالَ كَلَّآۖ إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهۡدِينِ ٦٢﴾ (-मूसा ने- कहा: कदापि नहीं, निश्चय मेरे साथ मेरा पालनहार है)। शुअरा: ६२।

[१३] दया एवं कृपा: ﴿فَأَرۡسِلۡ مَعَنَا بَنِيٓ إِسۡرَٰٓءِيلَ وَلَا تُعَذِّبۡهُمۡۖ﴾ (हमारे साथ बनी इस्राईल को जाने दे, और उन्हें यातना न दे)। ताहा: ४७।

मूसा अलैहिस्सलाम की नैतिक विशेषताएं:

मूसा अलैहिस्सलाम की नैतिक विशेषताएं:	[१४] यदि अल्लाह की वर्जनाओं का उल्लंघन किया जाता तो क्रोधित होना: ﴿فَرَجَعَ مُوسَىٰٓ إِلَىٰ قَوۡمِهِۦ غَضۡبَٰنَ أَسِفٗاۚ﴾ (तो मूसा वापस आए अपनी जाति की ओर अति क्रुद्ध शोकातुर हो कर)। त़ाहा: ८६। [१५] अति शीघ्र निर्णय लेने की विशेषता: ﴿فَخَرَجَ مِنۡهَا خَآئِفٗا يَتَرَقَّبُۖ﴾ (तो वह निकल गया उस (नगर) से डरा सहमा हुआ)। क़स़स़: २१। [16] सच्चाई प्रदर्शित करने की ताकत: ﴿وَإِنِّي لَأَظُنُّكَ يَٰفِرۡعَوۡنُ مَثۡبُورٗا ١٠٢﴾ (और हे फ़िरऔन! मैं तुम्हें निश्चय ध्वस्त समझता हूँ)। इस्रा: १०२। [17] जिम्मेदारी की गंभीरता के बारे में उनकी समझ: ﴿وَٱجۡعَل لِّي وَزِيرٗا مِّنۡ أَهۡلِي ٢٩ هَٰرُونَ أَخِي ٣٠ ٱشۡدُدۡ بِهِۦٓ أَزۡرِي ٣١﴾ (तथा बना दे, मेरा एक सहायक मेरे परिवार में से। मेरे भाई हारून को। उसके द्वारा दृढ़ कर दे मेरी शक्ति को)। त़ाहा: २९-३१। [18] इस लोक की मोहमाया से उनकी दूरी तथा परलोक को वरीयता देना: ﴿فَقَالَ رَبِّ إِنِّي لِمَآ أَنزَلۡتَ إِلَيَّ مِنۡ خَيۡرٖ فَقِيرٞ ٢٤﴾ (कहा: हे मेरे पालनहार! तू जो भी भलाई मुझ पर उतार दे मैं उसका आकांक्षी हूँ)। क़स़स़: २४। [19] सलाह स्वीकार करना: ﴿فَٱخۡرُجۡ إِنِّي لَكَ مِنَ ٱلنَّٰصِحِينَ ٢٠﴾ (अतः तू निकल जा, वास्तव में मैं तेरे शुभ चिंतकों में से हूँ)। क़स़स़: २०। [20] अत्यंत लज्जावान होना: "**निस्संदेह मूसा एक लज्जावान पर्दा करने वाले व्यक्ति थे, लज्जा करने के कारण उनके शरीर का कोई भाग नहीं देखा जा सकता था**"। बुख़ारी व मुस्लिम।
मूसा अलैहिस्सलाम की उम्मत की विशेषताएं:	[1] मूसा अलैहिस्सलाम को दो समुदायों में भेजा गया था: फ़िरऔन के साथ क़िब्त़ समुदाय एवं फ़िरऔन के सर्वनाश के बाद बनी इस्राईल समुदाय में। [2] वह उन पैग़ंबरों में सबसे अंतिम हैं जिनकी उम्मत (समुदाय) को अल्लाह ने नष्ट कर दिया था। ﴿وَلَقَدۡ ءَاتَيۡنَا مُوسَى ٱلۡكِتَٰبَ مِنۢ بَعۡدِ مَآ أَهۡلَكۡنَا ٱلۡقُرُونَ ٱلۡأُولَىٰ﴾ (और हमने मूसा को पुस्तक प्रदान की इस के पश्चात कि हम ने विनाश कर दिया प्रथम समुदाय का)। क़स़स़: ४३। इब्ने कस़ीर रह़िमहुल्लाह अपनी तफ़्सीर (६/ २३९) में इस आयत की व्याख्या करते हुए कहते हैं: (अर्थातः तौरात के उतारने के बाद किसी भी समुदाय को सामान्य रूप से दण्डित नहीं किया गया)।

मूसा अलैहिस्सलाम की उम्मत की विशेषताएं:	[3] वह हमारे पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद सबसे ज्यादा अनुसरण किए जाने वाले पैग़म्बर हैं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "**मेरे लिये एक बड़ा समूह उठाया गया, मैंने कहा: यह क्या है? क्या यह मेरी उम्मत है? कहा गया कि: यह मूसा एवं उनका समुदाय है**"। बुख़ारी व मुस्लिम।
अल्लाह ने उनको सांत्वना दिया एवं उनको बरी करार दिया:	अल्लाह ने उनको अपने इस कथन के द्वारा सांत्वना दिया: ﴿وَكُذِّبَ مُوسَىٰ﴾ (मूसा को झुठलाया गया)। हज्ज: ४४। तथा सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह ने अपने इस कथन के द्वारा उनको बरी करार दिया: ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ لَا تَكُونُواْ كَٱلَّذِينَ ءَاذَوْاْ مُوسَىٰ فَبَرَّأَهُ ٱللَّهُ مِمَّا قَالُواْۚ وَكَانَ عِندَ ٱللَّهِ وَجِيهٗا ٦٩﴾ (हे ईमान वालो न हो जाओ उनके समान जिन्होंने दुख दिया मूसा को, तो अल्लाह ने निर्दोष कर दिया उसे उनकी बनाई बातों से, और वह था अल्लाह के समक्ष सम्मानित)। अह़ज़ाब: ६९।
क़ुरआन में मूसा अलैहिस्सलाम का किस्सा:	वह क़ुरआन में सर्वाधिक उल्लेखित पैग़ंबर हैं, जिनका उल्लेख १३६ बार और ३४ सूरह में किया गया है। वे सूरह जिनमें उनका अत्याधिक उल्लेख किया गया है: सूरह अल-आराफ (21 बार), सूरह अल-क़सस़ (18 बार), और सूरह त़ाहा (17 बार)। उनकी कहानी को इतना अधिक दोहराए जाने का कारण: इन कहानियों में तर्क की शक्ति, उनके पास निशानियों की बाहुल्यता, तथा फ़िरऔन का अत्याधिक अहंकार, घमंड और अत्याचार। इब्न -ए- सादी रह़िमहुल्लाह अपनी तफ़्सीर (पृष्ठ: ४५३) में लिखते हैं: (अल्लाह तआला अधिकांशतः मूसा अलैहिस्सलाम की नुबुव्वत एवं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत के मध्य तथा उन दोनों की किताबों एवं शरीअतों के मध्य तुलना करता है, क्योंकि उन दोनों की पुस्तकें सर्वश्रेष्ठ पुस्तकें हैं, उन दोनों की शरीअतें सबसे परिपूर्ण शरीअतें हैं, उन दोनों की नुबुव्वतें सर्वोच्च नुबुव्वतें हैं तथा उन दोनों के अनुयायी मोमिनों में सबसे अधिक हैं)।

मूसा अलैहिस्सलाम का विवाहः	मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने सम्मानजनक जीवन के दस साल शुऐब की सुपुत्री के महर की खातिर बिताए, ﴿إِنِّيٓ أُرِيدُ أَنۡ أُنكِحَكَ إِحۡدَى ٱبۡنَتَيَّ هَٰتَيۡنِ عَلَىٰٓ أَن تَأۡجُرَنِي ثَمَٰنِيَ حِجَجٖۖ فَإِنۡ أَتۡمَمۡتَ عَشۡرٗا فَمِنۡ عِندِكَۖ﴾ (उसने कहाः मैं चाहता हूँ कि विवाह कर दूँ तुम्हारा अपनी इन दो पुत्रियों में से एक से इस पर कि मेरी सेवा करोगे आठ वर्ष, फिर यदि तुम पूरा कर दो दस (वर्ष) तो यह तुम्हारी इच्छा है)। क़सस़ः २७। इब्नुल जौज़ी रह़िमहुल्लाह स़ैदुल ख़ात़िर (पृष्ठः ४०) में कहते हैं किः (यदि विवाह करना सर्वोत्तम वस्तुओं में से नहीं होता तो नबियों के जीवन का अधिकांश भाग उसमें नहीं व्यतीत होता)।
कुरान में उल्लिखित उनकी कहानी का सारांश (क्रमानुसार):	[1] उनकी माँ का उन्हें दुग्धपान की अवस्था में समुद्र में फेंक देना, उनका जीवित रहना, तथा फ़िरऔन के महल में उनका प्रवेश करना। [2] उनका परिपक्व होना, फ़िरऔन के दल के एक व्यक्ति की हत्या, तथा मिस्र से उनका भागना। [3] मद्‌यन में कल्याणकारी भेंट। [४] उनका अपना कार्यकाल पूरा करना तथा मिस्र लौट कर आना। [५] तुवा की पवित्र घाटी में उनका आगमन। [६] फ़िरऔन के साथ उनका टकराव। [7] जादूगरों के साथ उनकी कहानी, और मिस्र से बनी इस्राईल के साथ उनका पलायन। [8] नेक बंदे (ख़िज़्र) से उनकी मुलाकात। [9] सामरी के साथ उनकी कहानी तथा उनके समुदाय के द्वारा बछड़े की पूजा। [10] क़ारुन के साथ उनकी कहानी। [११] गाय की कहानी।
एक आश्चर्यजनक घटनाः	अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "क्या तुम लोग इस बात से असमर्थ हो कि बनी इस्राईल की बुढ़िया की तरह हो जाओ?" लोगों ने (इसके विषय में) पूछाः तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "निस्संदेह मूसा अलैहिस्सलाम जब रात्रि में बनी इस्राईल को साथ ले कर मिस्र से निकले तो मार्ग भटक गये, उन्होंने पूछाः यह क्या है? तो बनी इस्राईल के विद्वानों ने कहा किः जब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की मृत्यु का समय निकट हुआ तो उन्होंने अल्लाह के नाम पर हम से दृढ़ वचन लिया कि हम मिस्र से उस समय तक नहीं निकलेंगे जब तक मिस्र से उनकी हड्डियां अपने

एक आश्चर्यजनक घटना:	साथ न ले चलें। उन्होंने पूछा: उनकी क़ब्र के स्थान का पता किसके पास है? कहा कि: बनी इस्राईल की एक व्योवृद्ध महिला के पास, तो उन्होंने उसकी ओर आदमी भेजा अतः वह आई, तो मूसा अलैहिस्सलाम ने उससे कहा: यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की क़ब्र की तरफ मेरा मार्गदर्शन करो, उस महिला ने कहा: उस समय तक नहीं जब तक तुम मुझे मेरा निर्णय न दे दो। पूछा: तुम्हारा निर्णय क्या है? कहा: मैं जन्नत में तुम्हारा साथ चाहती हूँ, मूसा अलैहिस्सलाम ने उसे यह देना अप्रिय समझा, तो अल्लाह ने उनकी ओर वह्य की कि इसे इसका निर्णय दे दो, तत्पश्चात वह उनको साथ ले कर एक झील की ओर गई, और कहा: इस पानी को सुखाओ, उन्होंने उसको सुखाया, तब महिला ने कहा: इसको खोदो, तो उन्होंने वहाँ खोद कर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की हड्डियां निकाल ली, जब वो उन्हें ज़मीन पर ले गए, तो देखा कि वहाँ दिन की तरह (स्पष्ट) एक रास्ता था। इब्ने हिब्बान एवं हाकिम ने इस हदीस़ को रिवायत किया है तथा अलबानी इसे स़हीह़ करार दिया है।
इब्नुल क़य्यिम रह़िमहुल्लाह के द्वारा यहूदियों का विवरण:	इब्नुल क़य्यिम रह़िमहुल्लाह अपनी पुस्तक "हिदायतुल ह़यारा" (पृष्ठ: ८) में लिखते हैं कि: (जिस समुदाय पर अल्लाह क्रोधित हुआ वह यहूदी हैं, जो झूठे, लांछन लगाने वाले, विश्वासघाती, धोखा एवं छल-प्रपंच करने वाले लोग, नबियों के हत्यारे, ब्याज एवं रिश्वत खाने वाले, प्रवृत्ति के आधार पर सर्वाधिक घृणित, स्वभाव के आधार पर सर्वाधिक दुष्ट, दया से सबसे दूर, प्रतिशोध से सबसे निकट, उनकी आदत द्वेष रखना है, उनकी मनोवृत्ति शत्रुता एवं ईर्ष्या पालना है, जादू-टोना, झूठ एवं छल का घर, पैग़ंबरों का इन्कार करने एवं उन्हें झुठलाने में जो उनका विरोध करे उनके निकट उनका कोई महत्व नहीं, मोमिन से किये गये संधियों एवं वचनों का पालन नहीं करने वाले, और जो उनसे सहमति जताए उनके लिये उनके निकट कोई करुणा एवं अधिकार नहीं, जो उनके साथ साझेदारी करे उनके लिये कोई न्याय अथवा निष्पक्षता नहीं, न ही उनके साथ घुलने-मिलने वाले लोगों के लिए कोई आश्वासन या सुरक्षा है, और न ही उनका उपयोग करने वाले किसी के लिए उनके निकट कोई सलाह है, बल्कि उनमें सबसे नीच: उनमें सबसे बुद्धिमान, उनमें सबसे चतुर: उनमें सबसे अधिक धोखेबाज, उनमें सीधे मन का व्यक्ति -इसकी संभावना कम ही है कि ऐसा कोई उनके बीच पाया जाये- वास्तव में यहूदी हो ही नहीं सकता, प्राणियों में सर्वाधिक संकीर्ण हृदय रखने वाले, उनके घर सर्वाधिक अंधकारमय, उनके आंगन सर्वाधिक दुर्गंधित, सर्वाधिक क्रूर मानसिकता वाले, उनका अभिवादन अभिशाप है, उनसे मिलना अपशगुन है, उनका ऊपरी वस्त्र: क्रोध है, तथा अंतः वस्त्र: घृणा है)।